।। सूरातन को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सूरातन को अंग लिखंते ||

|| रेखता ||

आगळी पाछळी सरब लेके चडे || मुख का हरफ सो मांड लेवे ||
हल हुंसियार होय बेठा नर ध्याय रे || अगम का सु तोय राम देवे ||
राम रिझावियाँ सरब नर रिझीया || भूप में फोज सब स्हेर आया ||
जक्त जंजाळ सूं लाग मत बिसरे || नांव साहीर ते हेर पाया ||
आन बोपार सो छोड दे टाँगरो || साहा पद सेठ सो कहे लोई ||
दास सुखराम ग्रकाब होय नाँव मे || जनम अर मरण जो मिटे दोई || १ ||

जो कुछ भी भक्ती करोगे जो पीछे की और आगे यानी आगे करोगे वह सब हिसाब में आ जायेगी । मुंह से अक्षर निकला,की हिसाब में लिख लिया जाता है । मुंह से राम नाम इतना अक्षर निकला,की वहाँ हिसाब में लिख लेते है,इसलिए तुम जल्दी होशियार होकर तुरन्त ध्यान करने लगो । राम नाम स्मरण करने से,अगम का सुख रामजी तुमको देंगे । एक रामजी को रीझाकर खुश कर लेने से सभी मनुष्य रीझकर खुश हो जाते है । जैसे राजा रीझकर खुश हो गया,तो सिर्फ एक राजा के खुश होने पर,उसमें राजा की पूरी फौज और शहर खुश होनेमे आ गये । राजा को खुश कर लेने पर राजा के शहर के दूसरे लोगों को अलग से खुश नही करना पड़ता है । राजा खुश हुआ यानी उसकी फौज और उसके शहर के लोगो को भी खुश होना ही पडेगा इसी प्रकार राम जी को खुष करने पर,सभी देवी देवता एवम् लोग अपने आप खुश हो जाते है,तूं इस संसार की झंझटों से लगकर,राम नामका स्मरण करना भूल मत । अरे राम नाम जैसा हीरा तुमको मिला है । इस राम नाम की शोध कर व दूसरा व्यापार,अन्य देवोंकी भक्ती करना तूं छोड़ दे,टांगरा याने तट्टू पर की दुकान ऐसा दूसरा हलका व्यापार छोड़ दे तब लोग तुझे साहुकार कहेंगे और साहू पद की पदवी तुझे मिलेगी । साहूकार भी हो गया और टांगरा छोड़ा नही,तो छोड़े बिना तुझे साहूकार कोई नही कहेगा उसी प्रकार अन्य देवताओं की भक्ती छोड़े बिना यह पद तुझे मिलेगा नही । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि तूं इस राम नाम का स्मरण करने में,गर्क हो जा जिससे तेरा गर्भ से जन्म लेना और मरना दोनो ही छूट जायेगा । || १ ||

जन्म अर मरण मिटावणा दुलभ हे || पातस्या सीस कोऊ चाल आवे ||
सात सर लंघ के पार पेलो लहे || तीन नव खंड कूं जीत जावे ||
लाख नव लाख के बीच मे भूप हे || फौज कूं चूर निसाण पाड़े ||
बाग बन माँय ज्हाँ जाय डेरा करे || पांच कूं घेर घर माँय बाड़े ||
लाय की लपट जो झपट माने नही || ब्रम्ह मैं चीत चमकार जावे ||
दास सुखराम या बिध जन जीत सी || जन्म संसार मे नाही आवे || २ ||

जन्म लेना और मरना मिटाना बहुत ही कठिन है । जितना नीचे लिखी हुयी बात दुर्लभ है,उतना दुर्लभ जन्म और मरना मिटाना दुर्लभ है,जैसे कोई बादशाह अपने उपर चढ़ाई करके आया,उस बादशाह को लौटाना जितना दुर्लभ है और सातों समुद्र लांघकर पार जाना जितना दुर्लभ है उतना जनम और मरना मिटाना दुर्लभ है तीनों लोक को तथा नवों खण्डो को जीतकर,दूसरी तरफ जाना पड़ता है । नव लाख फौजों के बीच में राजा है । उस फौज का चकनाचूर करनेके लिये निशाना लगाना पड़ता वह जितना दुर्लभ है उतना जनमना मरणा मिटाना दुर्लभ है । कभी बाग में,तो कभी वन में जाकर,डेरा डालता और इन पाँचो इन्द्रियों के पांचो विषय को पलटा के,घर में बंद करता व संसार के आग सरीखे झप़ट के समान दु:ख, संकट,हाल मानता नही व सतस्वरुप ब्रम्ह हो जानेपर संसार के दु:ख के भय,चमकार याद नही आते व उसके सभी भ्रम मिट जाते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि इस विधीसे जो संत संसार को जीतेंगे वे ही संत संसार मे फिरसे जनम नही लेगें । ।।२ ।।

ब्रम्ह की भक्त संत सूर जन साजसी ।। मूर मुरदार तें नाँही होवे ।।
कायराँ कपटियाँ कोस हजार हे ।। दुज घट नाँही नी ताही जोवे ।।
करत अस्नान सिर पाव सब केसऱ्या ।। तुरंग पर जीण घर आस मेले ।।
आगली पाछली अेक व्यापे नही ।। सूर जन फौज में फाग खेले ।।
मरण की आस नही जीवणो जुगमे ।। साम के काज सो सीस देवे ।।
दास सुखराम सो संत जन सूर्वा ।। ब्रम्ह का सुख बेहद लेवे ।। ३ ।।

सतस्वरुप ब्रम्ह की भक्ती तो कोई शूरवीर संत जन होगा वही साधेगा । कायर सतस्वरुप की भक्ती करने से डरनेवाले और कपटी से सतस्वरुप ब्रम्ह की भक्ती हजार कोस दूर रहती है । दुज घट(ब्राम्हण के घट में नही) उसे नित्य देखता । जैसे शूरवीर केशरी रंग में स्नान कर के अपने सिरसे पांव तक के सभी कपड़े केशरी रंग का कर लेते है । ऐसे शूरवीर रणक्षेत्र में जाकर लड़ने जाते समय मतलब घोड़े पर सवारी करते समय मैं लौटकर आऊंगा और घर के आदमियों को देखूंगा । ऐसी घरकी आशा मन में रखता नही । इस प्रकार शूरवीर संत भक्ती करने लग जानेपर,संसारके सुखोकी आशा बगल में रख देता है । शूरवीर को पीछे की या आगे की एक भी बात,आकर कुछ व्यापती नही है । ऐसेही संतजनोंके संसारके सुखोकी मन में,एक भी बात व्याप्त नही होती हैं । शूरवीर तो रणक्षेत्र में जाकर,जैसे नादान बच्चे होली खेलते है उस प्रकारसे फौज में खेलने लग जाते है । इस प्रकारसे शूरवीर संत सत्संगती के ज्ञान का बाण चलाते है और दूसरों के आये हुए ज्ञान के बाण सहन करते है और सत्संगती में होली खेलने जैसा खेलने लगते । ये संत इस प्रकारसे ज्ञान कहते है,ज्ञान सुनते है । शूरवीर संत मन को भक्ती मे घेर लेते है । जैसे शूरवीर संसारमें मरने की और जिवीत रहनेकी आशा रखते नही । वैसेही संतजन

संसारमें संसारके किसी सुखकी आशा रखते नही है। शूरवीर अपने स्वामी याने राजा के लिए अपना मस्तक देते है । इस प्रकार से शूरवीर संत,अपने स्वामी याने परमात्मा के लिए अपना मस्तक दे देते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसे जो शूरवीर संत है । वेही सतस्वरुप ब्रम्ह का सुख बेहद मे जाकर प्राप्त करते है ।।३।।

तन अर मन संत सूर जन सूं पसी ।। आस बेसास जुग नाही राखे ।।
होय नचिंत निसंक निरपख रे ।। बेण बतलाय बतलाय भाखे ।।
खग जन बाँवता मुख जन भळ हळे ।। धिन्न औतार जुग आज मेरा ।।
जोवताँ दिन सो मान ओ आवियो ।। करम सुण काट सूं सीस तेरा ।।
स्याम को लूण सो आज ऊजाळ सूं ।। जोवताँ बाट पुळ नीट आई ।।
दास सुखराम गडीर दे फोज मे ।। बाँवतां होय सो होय भाई ।। ४ ।।

जो शूरवीर संत होगा वही भक्ती में अपना शरीर और मन सतगुरू के चरण में सुपुर्द करेगा और शूरवीर जैसा दो श्वांस भी,संसार में जिवीत रहने की आशा नही रखता । इस प्रकार से शूरवीर संत भी संसार की दो श्वास की भी सुख लेने की आशा नही रखता । ऐसे शूरवीर संत निश्चित होकर शंका न रखते हुए,मुंह से बोल बोलकर सतस्वरुप ज्ञान वचन कहते हैं,जैसे शूरवीर के मुंख पर तलवार चलाते समय तेज(नूर)झलकने लगता है । वैसे ही ज्ञान की तलवार चलाते समय,संतजनों के भी चेहरे पर तेज आकर दिखाई पड़ने लगता है । और शूरवीर जैसे मन मे समझता है,कि इसलिये आज मेरा संसार में जन्म लेना धन्य हो गया,मै दुश्मन के फौज को सदा के लिये नष्ट कर देने की प्रतिक्षा कर रहा था,वह दिन आज आ गया । इसलिये आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कालरुपी संचीत एवम् प्रालब्ध कर्मो को कहते है अब मैं तुम्हारा मस्तक काटूंगा । स्वामी का मैं नमक खाया,उसका ऋण आज मैं चुका दूंगा । मै इस पल की प्रतिक्षा करता था वह पल बड़ी मुश्किल से आया है,इसप्रकार शूरवीर फौज मे तड़ाखे देकर तलवार से दुश्मनोको मारते और जो होगा सो होगा,ऐसा कहते । इसप्रकार शूरवीर संत रामनामसे कर्मोपर घाव करते है । ।। ४ ।।

जीत जुग माय सो साबतो नीसरे ।। मोज करतार सो तो ही देवे ।।
भक्त जुं मुक्त का अटळ अस्थान हे ।। आप का आपमे मेल लेवे ।।
सुरग पाताळ भू लोक मे संत को ।। नांव बिस्तार हरजस राखे ।।
दीप नव खंड नार नर मानवी ।। पछे जीव ले जस भाके ।।
आपका सुख ले सरब आगे धरे ।। सूर पे श्याम जो हात जोड़े ।।
दास सुखराम सुण सूर की बात रे ।। लाख दळ फौज कूँ अेक मोडे ।। ५ ।।

संतजन संचीत और प्रालब्ध कर्मो को मारकर और संसार को जीतकर बिना दोष संसार से निकल जाते तब सतस्वरुप करतार खुश होकर इनाम मे तुझे मोक्ष देंगे । मतलब

भक्तों के लिए जो मुक्ती का अटल स्थान है वह देगे और तुझे अपने अंदर मिला लेगे । ऐसे संतो की स्वर्ग,मृत्युलोक और पाताल में विस्तार से किर्ती फैलती है । सात द्विप और नौ खण्ड के स्त्री और पुरूष,सभी जीव संतो का यश गान करते है और मालिक अपने सभी सुख संतों के सामने हाजीर कर देता है । जैसे बादशहा अपने शूरवीर के आगे सुख रखता है और शूरवीर को हाथ जोड़ता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज शूरवीरों की बात कहते है की लक्षावधी फौजों के दल को एक शूरवीर संसार को लौटा देता है । इसीप्रकार शूरवीर संत संचीत और प्रालब्ध के अनंत कर्म खतम् कर देता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । || ५ ||

सूर अर बीर के कुण आडो फिरे || ताक सिर आय कौ बेण बोले ||
बाग सिर लाय मे धाय को डाकसी । जळत जाँ फिल सो को कुण खोले ||
सत्त तिण नार मे साच प्रकासियो || मद मे मत्त ज्यूं कुंज होई ||
इंद की फौज सो ब्रम्ह के बचन रे || ऊलट ना फेर सो देव कोई ||
चंद रवि पवन के कूण आडो फिरे || गंगजू जमन ऊलटाय घेरे ||
दास सुखराम युं संत जन सूर के || बापडी जक्त सो काहा फेरे || ६ ||

शूरवीरके कौन आड़ा आयेगा?उसकी मस्तककी तरफ याने आँखसे आँख मिलाकर,उससे कौन बात बोलेगा?बाघ के सिरपर कौन छलांग लगायेगा?और लगी हुयी आग के उपर कौन दौड़कर उड़ जायेगा और सफीलीके बड़े दरवाजे की किवाड़ जलते हुए कौन खोलेगा?वह बोलो और जिस स्त्री को शत-प्रतिशत सत् आकर प्रकाशित हुआ । उसके सत के आगे कौन टिकेगा । हाथी दारू पीकर मदोन्मत हुआ । ऐसे हाथी के आगे जाकर उसे कौन पलटायेगा । इन्द्र की फौज तथा ब्रम्हा का वचन,इनको कौन पलटायेगा कोई भी पुन: वापस पलटा नही सकता । चंद्र,सुर्य और वायुके आगे आड़ा कौन घूम सकता और गंगा,यमुना इन नदीयों को,कौन उलटा बहा सकता । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि उसी प्रकार से यह बेचारे संसार के लोग संतो और शूरवीरों के,सामने आकर क्या पलटा सकते है ? ||६||

सूर मन माँह सो संक नही ऊपजे || जाय दळ माँय सो करे भेळा ||
सेल धमकार सिर घाव केता सहे || लोथ ज्यूं पोथ यूं करे मेळा ||
घाव मे घाव तर्वार के गोळियाँ || तन सो घोड़ लो होय जावे ||
संत जन सूर की सुरत आगे रहे || पाछली मन मे नाही आवे ||
जूँझ दळ जीत संत सूर भू गिरत रे || लेस लिगार मन नाही आवे ||
दास सुखराम संत सूर कूं पड़त रे || परी असमान बर लेर जावे || ७ ||

शूरवीर के मन में शंका उत्पन्न ही होती नही है । शूरवीर तो शत्रु की फौज में जाकर भीड जाता है । भाले की चोट और मस्तक पर कितने ही घाव सहन करता और फौज में शत्रु

के फौज में लथ-पथ हो जाता है । तलवार के घाव पर तलवार और गोलियों के घाव गोलीयाँ खाकर शूरवीर का शरीर अनेक छेद्द पडे हुये गागर के जैसा हो जाता है । फिर भी संतजनों और शूरवीरों की सुरत आगे ही रहती है । ये दोनों शूरवीर रणक्षेत्र में जाते समय मेरे पीछे मेरी पत्नी,बच्चे एवं घरबार का क्या होगा? यह देखता नही ऐसेही सतस्वरुपी भक्ती करने वाले संतजन,पीछे बाल बच्चे और कुटुम्ब परीवार का क्या होगा?इसका लेश मात्र भी विचार मन में लाते नही । ये तो दोनों आगे ही चलते रहते,शूरवीर जूंझकर,पूरे दल को जीतते, तब जमीन पर पड़ते है ये शूरवीर अपनी तलवार,अपने हाथ से म्यान में डालकर और म्यान की रस्सी तलवार की मुट्ठी में बांधते है तब नीचे जमीन पर गिरते है । इसके पहले नीचे गिरते नही । तब शुरवीर के मन में लेशमात्र ही संसारके बिचार आते नही है । संतो को भक्ती करके अंत समय अमरलोक जाते समय,संसार का कुछ भी मन में आता नही है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि शूरवीर के पृथ्वी पर गिरते समय,इन्द्र की परीयाँ उस शूरवीर से शादी करके ले जाती है । इसी प्रकार संतो को अंत समय में फरिस्ते आकर मोक्ष को ले जाते है । ।।७।।

सूर कूं लाज लगार नही आवसी ।। सनस संका नही मन माँही ।।
होय निसंक निराट चड आविया ।। फोज में रमे युं खडग छाँही ।।
सोझ दळ सूर बिरोळसी सेंगरे ।। सूर सिर सेवरो तबे आवे ।।
आपका ओर सो सरब म्हेमा करे ।। धिन्न संत भूप अे दास कुवावे ।।
ओर प्रमोद सो आण माने नही ।। सूर का अंग सो अेक होई ।।
दास सुखराम क्हे संत जन सूरवाँ ।। जाय निसाण पें भिड़े जोई ।। ८ ।।

शूरवीर को तलवार चलाते समय,लाज थोड़ी भी नही आती तथा शंका और भय उसके मन में आता ही नही । इसी प्रकार संत भक्ती करने में शर्म नही करते और सनक या शंका किसी की भी या किसी से डर या दहशत मनमे मानते नही है । वे शूरवीर निशंक,निराट(ढ्ठिपन से) होकर चढ़ जाते है । फौज में जीधर उधर तलवार छायी रहती है । ऐसे तलवार की छाया में ये शूरवीर भी तलवार चलाकर,जैसे खेल खेलते है इस प्रकार से खेलने लगते है । शूरवीर दुश्मन की सभी दल को शोधकर सबको खतम् कर देते है तब शूरवीर के सिरपर सेवडा (तुरा)आता है । इसी प्रकार संत सभी धर्मो को छानकर,अच्छी बात ग्रहण कर लेते है तब वे संत शिरोमणी होते है । तो उस शूरवीर की और संत की, सभी लोग महिमा करते है । ऐसे संत,शूरवीर राजा और दास को संसार धन्य धन्य कहते है । ये शूरवीर संत रणक्षेत्रमें लड़ने नही जाना,ऐसा दूसरा ज्ञान मानते नही है शूरवीरोका और संतोका भाव एक ही होता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है वे इसी प्रकार सतस्वरुपी संतजन त्रीगुणी मायावी संतोका ज्ञान बिचार सुणते नही । संतजन और शूरवीर ये निशाने पर ही जाकर भिड़ते है । ।। ८ ।।

सोई जन सूरवाँ डर आड माने नही ।। पूठ सो भूल कहुँ नाही फेरे ।।
बहुत दळ माय सो खडग गड़ीर हे ।। बाय बुवाय सिर ब्होत जेरे ।।
मन मंहमंत गजराज कूं थोभ हे ।। जड़त जंजीर सो पाँव माही ।।
ईडग निसाण जन खेत मे गाड के ।। लड़न की बात सब ओर नाँही ।।
जूंझता जोस मन चोळ बोळा रहे ।। हुरख हुसियार हम गीर होई ।।
दास सुखराम सो संत जन सूरवाँ ।। मोर्चो मंड नही मुचे कोई ।। ९ ।।

जो किसी का भी भय मानते नही और वैरी को पीठ दिखाते नही,वे शूरवीर अनेको दलों को देखकर,डरकर,अपनी तलवार चलाने में हिचकता नही इसी प्रकार शूरवीर संत अनेको लोग विरोध करते रहते,फिर भी वे संत भक्ती की पकड़ी हुयी मूठ छोड़ते नही,शूरवीर दूसरों पर तलवार चलाते और अनेको को मजबूर कर देते है । इसी प्रकार संतजन दूसरे लोगों के अनेक प्रकार के ताप और त्रासदी सहन करते है और लोगों को ज्ञान की तलवार चलाकर,बहुतों को याने जेर मजबुर कर देते है । मन यह मदोन्मत हुआ हाथी है,इस हाथी को रोक देते है और मन रूपी हाथी के पैर में,ध्यान रूपी जंजीर बांधकर,जकड़ बन्ध कर देते है । उस योग से मन इधर-उधर नही जा पाता है । अडिग याने न डगमगानेवाला,निशान ये शूरवीर रणक्षेत्र में गाड़कर सिर्फ लड़ने की ही सब बाते करते है दूसरी कोई भी बात नही करते है । लड़ते समय मन में जोश आता है और किलकारी भी बहुत रहती है । होशियारी मजबूत होती है,ऐसे शूरवीर लड़ाई का मोर्चा बना लेनेपर,पिछे हटते नही,इसी प्रकार संत जन अनेक बाधाओ आनेपर भी अमरलोक जानेसे रुकते नही । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।। ९ ।।

सूर समशेर कर हात भालो लियो ।। खग कूं बेग मंगाय लेवे ।।
बाजीयो ढोल सो ढील नही बात रे ।। हाथ को कोथ छिटकाय देवे ।।
होय असवार दळ माँही भेळा करे ।। राड़ को हुकम सो मोय दीजे ।।
आपके तेज प्रताप ते जूँ झणो ।। दास की बिणती मान लीजे ।।
बेण म्हाराज के मुख सूं सुणत सो ।। सूर दळ माँय सो करे मेला ।।
दास सुखराम सो संत जन सूरवाँ ।। रमे नादान ज्यूँ फाग खेला ।। १० ।।

शूरवीर ने तलवार और भाला को जल्दी मंगाकर हाथ मे ले लेते है । जब लड़ाई का बाजा बजने लगता है तब जरासी भी ढिलाई करते नही है और किससे बात भी बोलते नही । हाथ का ग्रास डाल देते है और घोड़े पर सवारी करके दल में जाकर भिड़ जाते है और लड़ने का मुझे आदेश दो ऐसा बोलते है । अपने तेज से और प्रताप से जूझते है । यह दास की बिनती मान जाइये ऐसा बोलते । महाराज के मुंह से लढो ये वचन सुनते ही शूरवीर दल में जाकर भिड़ जाता है और शूरवीर जैसे नादान बालक होली खेलते है उस प्रकार शूरवीर लढाई मे लढाई खेलने लगता है । इसी प्रकार आदि सतगुरू सुखरामजी

महाराज कहते है कि शूरवीर संत कालसे और कालके फौजसे लढाई करते है । ।।१०।।

नाँव समसेर कर धीर की ढाल रे ।। सुरत का बाण निज फेंक सूरा ।।
ग्यान गजराज बेराग के ऊपरे ।। होय असवार कर सरब दूरा ।।
तत्त का तीर अर ध्यान कर धनक रे ।। पवन की पुणछ चडाय दिजे ।।
मन की मूट कर चित्त का चाबका ।। निरत सूं निरख अध मार लीजे ।।
सब्द की तोफ कर भेद गोळा भरे ।। ग्यान के मोर्चे मांड दीजे ।।
दास सुखराम गढ भ्रम कूँ ढाय रे ।। ब्रम्ह को देस सो जाय लीजे ।। ११ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज संतजन के शस्त्र कौनसे है यह दिखाते है । संतजन के पास राम नाम की तलवार है और धैर्य की ढाल है और संत की सुरत ये संत के बाण है,जैसे शूरवीर बाण फेकते है,वैसे संत जीवो पे सूरत फेकते है । संतजन का ज्ञान यह संतजन का हाथी है और ऐसे हाथी पर बैठना याने वैराग्य पर बैठना है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है इस ज्ञान रूपी हाथी पर बैठकर बाकी सब मायाकी इच्छाओको दूर करो । तत्त का तीर और ध्यान का धनुष्य करो । तीर के पीछे जैसे पक्षियों की पंख की पूंछ लगाते है जिससे तीर इधर-उधर डगमगाती नही है । ऐसी ही श्वास की पूंछ लगा दो । मन की मूठ बनाओ । चित्त का चाबुक बनाओ और निरत से देखकर पाप को मार डालो । आदि सतगुरू सुखरामजी कहते है,कि इस ज्ञान की तोप से,राम नाम रूपी गोला दाग कर,भ्रम रूपी किले को गिरा दो और जाकर ब्रम्ह के देश पर कब्जा कर लो । ।। ११ ।।

।। इति सूरातन को अंग संपूरण ।।